एक सौ चार वर्ष की हुई सागर की
जवाहरलाल नेहरू पुलिस अकादमी

अशोक कुमार मिश्र

जवाहरलाल नेहरू पुलिस अकादमी, सागर एक प्राचीन दुर्ग में स्थित है। इस दुर्ग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अत्यंत रोचक एवं गौरवशाली है। इस दुर्ग का निर्माण दांगी राजा ऊदनशाह ने सन् 1660 में करवाया था। लाखा बंजारा झील के तट पर स्थित होने से इस किले की सुन्दरता और बढ़ गई है। विंध्य पर्वत श्रृंखला होने से यहां के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का दृश्य अत्यंत मनोरम होता है। इस किले में निर्मित रानी महल एवं नजरबाग उस काल की शानो-शौकत एवं उत्तम व्यवस्था का प्रतीक है। प्राचीर पर बने बुर्ज, भारी-भरकम तोपें और विशाल द्वार कड़े सुरक्षा प्रबंधक के परिचायक हैं। दांगी राजा ऊदनशाह के बाद सन् 1732 से 1761 तक इस दुर्ग पर मराठा राजाओं का आधिपत्य रहा है। बुर्ज पर महारानी लक्ष्मीबाई की प्रतिमा स्थापित है।

मराठा राजा गोविन्द राव के पास 100 गढ़ों का आधिपत्य था। इसके दो बेटे बाली और रघुनाथ राव थे। गोविन्द राव के बाद सत्ता रघुनाथ राव के हाथ में आई। इनकी दो रानियां राधाबाई एवं रुकमाबाई थीं। रघुनाथ राव की मृत्यु के बाद इन्हीं रानियों ने शासन व्यवस्था को सम्हाला। रानियों द्वारा किया गया राजपाट, इस बात को प्रमाणित करता है कि हमारे देश के इतिहास में महिलाओं की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ थी। महिलाओं को सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में बराबर का स्थान प्राप्त था।

अनेक राजाओं के आधिपत्य में होता हुआ यह किला सन् 1818 में अंग्रेजों के आधिपत्य में आ गया। चारों ओर से सुरक्षित होने के कारण अंग्रेजों ने इस किले को अपना शस्त्रागार बनाया। सन् 1857 की क्रांति के समय किले में निवासरत एवं आसपास के गढ़ों से भागकर आये अंग्रेजों ने चारों तरफ से सुरक्षित होने के कारण इसी किले में शरण ली थी तथा क्रांति को कुचलने के बाद वे यहां से सुरक्षित वापस चले गये थे।

सभी छायाचित्र : उमाशंकर मिश्र

प्रमुख द्वार

इस किले में 1906 में पुलिस प्रशिक्षण स्कूल की स्थापना की गई। पुलिस स्कूल के रूप में स्थापित इस संस्था के प्रथम प्राचार्य श्री जी.डब्ल्यू. गेयर थे। वर्ष 1936 में इसे पुलिस महाविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया तथा 1986 में इस प्रशिक्षण संस्था को अकादमी का दर्जा प्राप्त हुआ। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1952 में इस प्रशिक्षण संस्था का भ्रमण किया था। आज यह संस्था 'जवाहरलाल नेहरू पुलिस अकादमी सागर' के नाम से जानी जाती है। यह संस्था देश की प्रमुख प्राचीन पुलिस प्रशिक्षण संस्थाओं में से एक है।

पुलिस अकादमी तीन परिसरों में विभाजित है। एक किला परिसर, दूसरा मकरोनिया परिसर तथा तीसरा पी.टी.सी.ग्राउण्ड परिसर। पी.टी.सी.ग्राउण्ड पर राष्ट्रीय पर्व पर जिले की परेड आयोजित की जाती है। अकादमी में दो तरह से प्रशिक्षण संचालित किये जाते है- 1. बुनियादी प्रशिक्षण, 2. सेवारत प्रशिक्षण। इन प्रशिक्षणों में विभिन्न विषयों के आंतरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ परेड एवं योग का सतत अभ्यास कराया जाता है। सीधी भर्ती के उपनिरीक्षक, उप पुलिस अधीक्षक स्तर के अधिकारियों का एक वर्षीय प्रशिक्षण संचालित किया जाता है। इसके साथ ही साथ भारतीय

पुलिस सेवा के मध्यप्रदेश संवर्ग के अधिकारी छह सप्ताह के व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु इस संस्थान में संबद्ध किये जाते हैं।

जिलों में पदस्थ अधिकारियों को संक्षिप्त समय के लिए प्रशिक्षण हेतु इस संस्थान में भेजा जाता है, ताकि अधिकारियों की जानकारियों एवं ज्ञान को अद्यतन बनाया जा सके तथा उन्हें अपराध अनुसंधान की नवीन वैज्ञानिक विधियों की जानकारी दी जा सके। इस तरह अनेक सोपानों को पार करती हुई यह संस्था प्रतिवर्ष पुलिस की मैदानी कार्यवाही के लिए तथा समाज को सुव्यवस्थित रखने के लिए तथा नव अधिकारियों को प्रशिक्षित करती है।

विभागीय प्रशिक्षण के साथ-साथ अकादमी में दूसरे विभाग के अधिकारियों के लिये भी संक्षिप्त कोर्स संचालित किये जाते हैं जैसे-उपजिलाधीश, नायब तहसीलदार, होमगार्ड, आबकारी उपनिरीक्षक, वन विभाग के अधिकारी, मध्यप्रदेश विद्युत मण्डल के अधिकारी, परिवहन विभाग के अधिकारी, विधानसभा मार्शल, सहायक लोक अभियोजक आदि। इन कोर्सेस का उद्देश्य अधिकारियों को कानून की एवं अन्य व्यावहारिक विषयों की

104 वर्ष का मोनो (जे.एन.पी.ए., सागर)

जानकारी देना तथा पुलिस कार्यप्रणाली से समन्वय करना होता है।

अब तक इस संस्था से 84 उपनिरीक्षक प्रशिक्षण सत्र दीक्षित किये जा चुके हैं। इनमें कुल 7328 उप निरीक्षक, 307 महिला उप निरीक्षक तथा 7021 पुरुष उप निरीक्षक अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया है। अब तक 32 उप पुलिस अधीक्षक प्रशिक्षण सत्र दीक्षित किये जा चुके हैं, इनमें कुल 575 उप पुलिस अधीक्षक जिसमें 524 पुरुष उप पुलिस अधीक्षक, 51 महिला उप पुलिस अधीक्षक दीक्षित किये जा चुके हैं। 32वें उप पुलिस अधीक्षक (परि.) सत्र के 26 उप पुलिस अधीक्षक, 3 नगर सेनानी (19 पुरुष एवं 10 महिला) की दीक्षांत परेड 14 जनवरी 2010 को संपन्न हुई है। इसी प्रकार मकरोनिया परिसर से अब तक 3 नव आरक्षक प्रशिक्षण सत्र संचालित हो चुके हैं।

इस 32वें उप पुलिस अधीक्षक सत्र के एक वर्षीय प्रशिक्षण के दौरान इन प्रशिक्षणार्थियों के दो प्रशिक्षण भ्रमण आयोजित कराये गये। प्रथम भ्रमण में प्रशिक्षार्थियों को पचमढ़ी भेजा गया। इस दौरान इन प्रशिक्षणार्थियों को पर्यावरणीय संतुलन एवं पर्वतारोहण की बुनियादी जानकारी दी गई। इनका दूसरा भ्रमण कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान के लिये आयोजित किया गया। इस भ्रमण के दौरान वन विभाग के अधिकारियों से प्रत्यक्ष चर्चा करने का अवसर उपलब्ध हुआ। वन्य अधिकारियों द्वारा इन्हें वन्य संरक्षण अधिनियम एवं पशु अत्याचार निवारण अधिनियम का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही वन अपराधों से संबंधित जानकारी भी दी गई।

अपराध अनुसंधान की महत्ता को देखते

डी.जी.पी. द्वारा निरीक्षण

हुए प्रशिक्षण में विधि विज्ञान से संबंधित विषयों के प्रशिक्षण पर अपराध अनुसंधान की वैज्ञानिक तकनीकियों पर अधिक ध्यान दिया गया। अनुसंधान कार्य को व्यावहारिक रूप से समझाने के लिये कृत्रिम घटनास्थल निर्माण कर सेमुलेशन अभ्यास कराया गया। अपराध अनुसंधान में न्यायिक चिकित्सा के पहलू को स्पष्ट करने के लिये मेडीकोलीगल संस्थान भोपाल के वरिष्ठ अधिकारियों को आमंत्रित कर प्रशिक्षण दिलाया गया। पुलिस मुख्यालय की एससीआरबी शाखा से अधिकारियों को आमंत्रित कर सीपा की जानकारी दिलवाई गई। साथ ही समय-समय पर पुलिस मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों के व्याख्यान आयोजित कर उनके अनुभवों से लाभान्वित होने का अवसर भी इन प्रशिक्षणार्थियों को दिया गया है।

अकादमी में पदस्थ अधिकारियों के अनुभवों का लाभ तो प्रशिक्षण के दौरान इन्हें मिला ही साथ ही सागर विश्वविद्यालय के विषय विशेषज्ञ, सागर बार कौंसिल के अधिवक्तागण, विधि विज्ञान प्रयोगशाला के वैज्ञानिक अधिकारियों, समाजविद, सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी, प्रदेश में पदस्थ वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के अनुभवों को सुनने, उनसे सीखने का अवसर इन्हें उपलब्ध कराया गया है।

म्यान में तलवार लगाकर सम्मानित करते हुए डी.जी.पी.

पुलिस-प्रेस संबंधों के बारे में भी संभागीय जनसंपर्क कार्यालय सागर के अधिकारियों तथा सागर के वरिष्ठ पत्रकारों के साथ इनकी कार्यशालायें आयोजित की गयी थीं। इन अधिकारियों के ये अनुभव मैदानी कार्यों में इनकी मदद करेंगे।

दीक्षांत समारोह

अकादमी में 14 जनवरी, 2010 को आयोजित 32वें उप पुलिस अधीक्षक (परिवीक्षाधीन) सत्र के दीक्षांत समारोह में पुलिस महानिदेशक श्री एस.के.राउत ने परेड की सलामी ली। इस अवसर पर श्री राउत ने नये पुलिस अधिकारियों से कहा कि वे अहं से दूर रहें तथा विनम्रता और मानवीयता के गुणों को न भूलें। श्री राउत ने सभी विधाओं में सर्वोत्तम घोषित कु. रश्मि अग्रवाल को मुख्यमंत्री शील्ड प्रदान करने के साथ ही उन्हें तलवार प्रदान कर सम्मानित किया। एक वर्ष के प्रशिक्षण में कुल 29 अधिकारियों ने भाग लिया। इनमें दस महिला अधिकारी शामिल थीं।

अकादमी के संचालक श्री टी.के.घोष ने नये अधिकारियों को संविधान तथा राष्ट्रीय ध्वज के प्रति निष्ठा, प्रभुसत्ता और अखंडता की रक्षा करने तथा निष्पक्ष कार्य संपादन की शपथ दिलाई।

दीक्षांत परेड का नेतृत्व श्री सुनील पाटीदार ने किया। कु. प्रतिभा त्रिपाठी ने टू आई सी का दायित्व निभाया। कु. प्रतिभा त्रिपाठी को आउटडोर बेस्ट का तथा रश्मि अग्रवाल को इंडोर बेस्ट का पुरस्कार मिला। विधि में सर्वश्रेष्ठ का पुरस्कार कु. रश्मि अग्रवाल को और मस्केटरी में सर्वोत्तम का पुरस्कार गजेन्द्र कंवर को दिया गया। पुरुषों की खेल प्रतियोगिता में नीरज ठाकुर, गजेन्द्र कंवर, शशिकांत कनकने और गोपाल ठाकुर तथा महिला खेलों में अंजूलता पटले, श्रद्धा जोशी, वीना सिंह, आरती महाजन और नीलमणि लड़िया ने पुरस्कार जीते।

(लेखक संयुक्त संचालक जनसंपर्क सागर हैं।) ❖

सभी छायाचित्र : उमाशंकर मिश्र, सागर

राजा उदल शाह नवीन भवन किला (सागर तालाब)